

खोसी जाती है 2. पेड़ के नीचे या जंघाओं के बीच का स्थान।

**काज** पुं. (तद्.) 1. प्रयत्न जो किसी उद्देश्य की सिद्धि के लिए किया जाए, कार्य, कृत्य मुहा. के काज- के हेतु, निमित्त 2. व्यवसाय, रोजगार जैसे- तुम्हें कोई काम-काज नहीं है 3. प्रयोजन 4. विवाह संबंध।

**काज** पुं. (पुर्त.) छेद जिसमें बटन डालकर फँसाया जाता है, बटन का घर।

**काजर** पुं. (तद्.) दे. काजल मुहा. काजर की कोठरी- काजर की कोठरी में कैसे हूँ सयानो जाए, एक लीक काजर की लागें पै लागें री।

**काजल** पुं. (तद्.) वह कालिख जो दीपक के धुँए से किसी ठीकरे पर जमाई जाती है और आँखों में लगाई जाती है मुहा. काजल घुलाना, डालना, देना, सारना- (आँखों में) काजल लगाना; काजल-पारना- दीपक के धुँए की कालिख को किसी बरतन में जमाना; काजल की ओबरी या कोठरी- ऐसा स्थान जहाँ जाने से व्यक्ति दोष या कलंक से उसी प्रकार नहीं बच सकता, जैसे काजल की कोठरी में जाकर काजल लगने से, कलंक का स्थान; यह मथुरा काजल की ओरी जे आवहि ते कारे -सूर।

**काजी** पुं. (अर.) मुसलमानों के धर्म और राजनीति के अनुसार न्याय की व्यवस्था करनेवाला जैसे. काजी जी दुबले क्यों शहर के अंदरों से।

**काजू** पुं. (देश.) (कोंक काज्जु) 1. एक पेड़ और उसका फल जिसकी गिरी मेवे के रूप में खाई जाती है।

**काट** स्त्री. (देश.) काटने की क्रिया जैसे- छुरी की काट अच्छी है।

**काट-कपट** स्त्री. (देश.+तत) चोरी छिपे किसी चीज को कम कर देने की स्थिति।

**काट छाँट** स्त्री. (देश.) 1. मारकाट 2. कतरन 3. किसी वस्तु में कमी वेशी 4. घटाव बढ़ाव।

**काटन** पुं. (अं.) 1. कपास, रूई 2. रूई का कपड़ा।

**काटना** क्रि.स. (तद्.) 1. किसी धारदार चीज की दाब या रगड़ से दो टुकड़े करना जैसे- सब्जी काटना, हाथ काटना मुहा. काटो तो खून या लहू नहीं- किसी दुखदायी, भयानक या अपना रहस्य खोलनेवाली बात जिसे सुनकर एक बारगी सन्न रह जाना 2. पीसना, मसाला काटना, भंग काटना; जैसे- वह बट्टा जो खूब मसाला काटता है 3. घाव करना जैसे- जूते का काटना 4. युद्ध में मारना जैसे- उस लड़ाई में सैकड़ों सैनिक काट दिये गए 5. दूर करना जैसे- पाप काटना, मैल काटना 6. समय बिताना जैसे- रात काटना मुश्किल हो गया 7. कलम की लकीर से लिखावट को रद्द करना, जैसे- उसने तुम्हारा लिखा काट दिया, मुहा. जेल में दिन बिताना- जेल काटना, काटने दौड़ना- चिड़चिड़ाना; अन्य प्रयोग- रास्ता काटना, पतंग काटना, बात काटना, काटे खाना या काटने दौड़ना 8. बुरा मालूम होना जैसे- उनके बिना घर काटे खाता है।

**काट फाँस** स्त्री. (देश.) 1. किसी को अलग करने या किसी को अपने जाल में फँसाने की क्रिया 2. जोड़ तोड़ 2. इधर की उधर लगाना।

**काटू** पुं. (देश.) 1. काटनेवाला 2. डरावना।

**काठ** पुं. (तद्.) 1. पेड़ का कोई स्थूल अंग जो पेड़ से अलग हो गया हो, लकड़ी, काठ कठंगर-निस्सार वस्तु, सामान जो बेकार हो गया हो मुहा. काठ का उल्लू- जड़, घोर अज्ञानी; काठ की घोड़ी- आस्तित्वहीनता का आधार; काठ की हांडी- धोखे की चीज, ऐसी वस्तु जिसका धोखा एक बार से अधिक न चल सके जैसे- जैसे हांडी काठ की चढ़े न दूजी बार; काठ का घोड़ा- वैसाखी; काठ होना-संज्ञा शून्य होना, समस्त पद बनने से 'काठ' को 'कठ' हो जाता है जैसे- कठफोड़वा, कठपुतली, गूदाहीन फल वाले वृक्ष जैसे- कठजामुन, कठबेरा।